अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : बारहवीं – जैन सिद्धान्त शास्त्री (परीक्षा 20 जुलाई, 2014)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	10	24	36	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) मनःपर्याय ज्ञान में कितनी प्रकृतियों का बन्ध होता है -

(क) 58 (ख) 65

(ग) 63 (घ) 117 ( )

(b) वर्तमान में आचारांग के पद हैं -

(क) 2500 (ख) 2000

(ग) 3000 (घ) 1500 ( )

(c) आर्त्तध्यान किसमें नहीं होता है -

(क) देशविरत (ख) साधु

(ग) वीतराग (घ) सम्यग्दृष्टि ( )

(d) शुक्लध्यान के अन्तिम दो भेद किन गुणस्थानों में होते हैं -

(क) 11वें गुणस्थान (ख) 12वें गुणस्थान

(ग) 13वें गुणस्थान (घ) 13 व 14वें गुणस्थान ( )

(e) निर्ग्रन्थ में संयम होता है -

(क) यथाख्यात (ख) सामायिक

(ग) परिहारविशुद्धि (घ) सूक्ष्म सम्पराय ( )

(f) एक जीव के सिद्ध होने पर कितने समय बाद अवश्य दूसरा सिद्ध होता ही है -

(क) एक वर्ष (ख) 6 माह

(ग) एक माह (घ) अनन्तकाल ( )

(g) योगों का विवेकपूर्वक निग्रह करना है -

(क) समिति (ख) तप

(ग) गुप्ति (घ) संवर ( )

(h) आचारांग के द्वितीय श्रुतस्कंध की चौथी चूलिका का नाम है -

(क) भावना (ख) विमुक्ति

(ग) एषणा (घ) पिण्डैषण ( )

(i) आचारांग के द्वितीय श्रुतस्कंध के द्वितीय अध्ययन का नाम है -

(क) लोक विजय (ख) लोकसार

(ग) लोक (घ) लोकाकार ( )

(j) आचारांग में मनुष्य की तुलना किसके साथ की गई है -

(क) अग्नि (ख) शेर

(ग) वनस्पति (घ) जल ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1 = (10)

(a) अनाहारक में 5 गुणस्थान पाये जाते हैं। ( )

(b) स्नातक का उपपात नहीं होता है। ( )

(c) अवधिदर्शन में 10 गुणस्थान होते हैं। ( )

(d) दोष के अनुसार प्रव्रज्या कम करना, व्युत्सर्ग है। ( )

(e) अग्र का अर्थ वेदनीयादि चार अघातिकर्म या 7 कर्म है। ( )

(f) 'जे लोभदंसी से मोहदंसी' यह क्रम सही है। ( )

(g) व्याख्याकारों ने गुण की 15 प्रकार से व्याख्या की है। ( )

(h) भगवान किसी के पूछने पर बोलते थे। ( )

(i) ज्ञान और आत्मा दोनों न सर्वथा भिन्न हैं, न अभिन्न। ( )

(j) धर्म न तो गांव में होता है, न अरण्य में। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- 10x1 = (10)

(a) मैंने केशीकुमार श्रमण से 12 व्रत ग्रहण किये। .....

(b) मैं केवल 17 प्रकृतियों का ही बन्ध करता हूँ। .....

(c) मैंनें लौकिक, अलौकिक कष्टों को समभाव पूर्वक सहन किया। .....

(d) मेरे दो भेद हैं- ज्ञान चेतना और अनुभव चेतना। .....

(e) मुझे बढ़ाया नहीं जा सकता। .....

(f) मेरे दो नाम हैं- विमोक्ष और विमोह। .....

(g) मेरे 16 भेद हैं। .....

(h) मैं प्रत्येक कर्म की उत्कृष्ट स्थिति का अधिकारी हूँ। .....

(i) मुझसे संवर और निर्जरा दोनों होते हैं। .....

(j) मुझमें सप्तमी विभक्ति होती है। .....

प्र.4 प्रश्न एवं उत्तर दोनों क्रम से नहीं दिये हुए हैं, आप उत्तर की जोड़ी मिलाकर सही उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) ज्ञाता	-	7वाँ अध्ययन	.....
(b) 9 अध्ययन	-	बैठना	.....
(c) पुरुष	-	प्रज्ञा, अज्ञान	.....
(d) महापरिज्ञा	-	आत्मा	.....
(e) 72 प्रकृतियाँ	-	51 उद्देशक	.....
(f) अच्छ	-	30 कोटाकोटि सागर	.....
(g) प्रत्येक प्रकृति	-	मित्र	.....
(h) जिन भगवान	-	5 अनुत्तरविमान	.....
(i) ज्ञानावरणीय	-	आतप	.....
(j) अन्तराय	-	ग्यारह परीषह	.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए :- (कोई 12) **12x2 = (24)**

(a) राजा का पुत्र हंसता है। प्राकृत में वाक्य बनाइए।

.....

.....

(b) साधुओं में ज्ञान होता है। प्राकृत में वाक्य बनाइए।

.....

.....

(c) सन्धि कीजिए - 1. जीव+अजीव, 2. दिण+ईस।

.....

.....

(d) पृथ्वीकाय का बन्ध स्वामित्व लिखिए।

.....

.....

(e) कार्मण काययोग में गुणस्थान व बन्ध स्वामित्व की संख्या लिखिए।

.....

.....

(f) संवर के संक्षेप में कितने भेद हैं, नाम लिखिए।

.....

.....

(g) चारित्रमोह के निमित्त से कौनसे परीषह होते हैं ?

.....

.....

(h) कर्मों के आत्यन्तिक क्षय के हेतु क्या हैं ?

.....

.....

(i) शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः। इस सूत्र का अर्थ लिखिए।

.....

.....

(j) पणया वीरा महावीहिं। इस सूत्र का अर्थ लिखिए।

.....

.....

(k) कामकामी खलु अयं पुरिसे। इस सूत्र का अर्थ लिखिए।

.....

.....

(l) उद्देसो पासगस्स नत्थि। इस सूत्र का अर्थ लिखिए।

.....

.....

(m) सुत्ता अमुणी मुणिणो सया जागरंति। इस सूत्र का अर्थ लिखिए।

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में दीजिए :- (कोई 12) 12x3=(36)

(a) अव्यय किसे कहते हैं ?

.....

.....

.....

.....

(b) वैक्रिय मिश्र काय योग में बन्ध स्वामित्व लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(c) **चौथी अथवा सातवीं नरक का बन्ध स्वामित्व लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(d) **जिण सुर ..... थीणतिगं। गाथा को पूर्ण कर लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(e) **तीर्थंकर नामकर्म के बारे में ज्ञातव्य लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(f) **वेदनीय कर्म के उदय से कौनसे परीषह होते हैं ?**

.....

.....

.....

.....

(g) **तत्त्र्येककाययोगायोगानाम्। इस सूत्र का अर्थ समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

(h) **'सत्य' शब्द के तीन अर्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(i) **राजा प्रदेशी ने जीवित और मृत चोर के वजन में अन्तर नहीं पाने से जीव व शरीर को एक ही माना, उसका केशी श्रमण ने किस उदाहरण से उत्तर दिया ?**

.....

.....

.....

.....

(j) **कौनसे चार कारणों से देव मनुष्य लोक में नहीं आ पाते ?**

अथवा

कौनसे चार कारणों से नारकी जीव मनुष्य लोक में नहीं आ पाते ?

.....

.....

.....

.....

(k) **हे भदन्त ! क्या आप मुझे हथेली में स्थित आँवले की तरह शरीर से जीव को बाहर निकालकर दिखाने में समर्थ हैं ?**

.....

.....

.....

.....

(l) **जाए सद्धाए णिक्खंतो तमेव अणुपालिया विजहित्ता विसोत्तियं। इस सूत्र का अर्थ स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

(m) **आर्त्तध्यान के चार भेदों को लिखकर उसके स्वामियों का कथन कीजिए।**

.....

.....

.....

.....